Refresher Course in Sanskrit (RC-225.2010)

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के यू.जी.सी. अकादमिक स्टॉफ कॉलेज द्वारा आयोजित संस्कृत विषय का 21 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्क्रयम आज भव्यता पूर्वक सम्पन्न हुआ। अकादमिक स्टॉफ कॉलेज के निदेशक प्रो. कुलवन्त सिंह पठानिया ने सभी प्रतिभागी प्राध्यापकों का अभिनन्दन करते हुए उनसे यहाँ अर्जित शिक्षण कौशल से अपने छात्रों को उपकृत करने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान प्रो. सी.एल. चन्दन ने प्रतिभागी प्राध्यापकों को सम्बोधित करते हुए संस्कृत भाषा की कम्प्यूटर उपयुक्तता पर प्रकाश डाला। उन्होंने संस्कृत भाषा के सरलीकरण हेतु विद्वानों का आह्वान किया। संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. वीरेन्द्र कुमार मिश्र ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों, आयोजको एवं प्रतिभागी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। अकादमिक स्टॉफ कॉलेज की उप-निदेशिका डॉ.0 किरण रेखा की सौम्य उपस्थिति से समारोह अलंकृत था।

Refresher Course in Environmental Sciences (RC-226.2010)

आज दिनांक 30 अगस्त 2010 को हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अकादमिक स्टॉफ कॉलेज में पर्यावरण विज्ञान में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। इस पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. सुनील गुप्ता, कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला रहे। इस अवसर उन्होंने कहा कि पर्यावरण विज्ञान देश की संस्कृति का आधार है। उन्होंने पर्यावरण की महत्ता एवं

उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ये मानव को विकट परिस्थितियों एवं संघर्ष के दौर में नई राह दिखाते है और सकुन प्रदान करते है। प्रो. गुप्ता ने कहा कि अगर देश का हर नागरिक व्यक्तिगत साफ–सफाई की आदत डाले और कुदरती संसाधनों का सही उपयोग करे तथा प्रकृति के संरक्षरण में अपना योगदान दे तो हम पर्यावरण को दूषित होने से रोक सकते है।

प्रो कुलवन्त सिंह पठानिया ने कहा कि पर्यावरण विज्ञान पुनश्चर्या कार्यक्रम का आयोजन करना अपने आप में एक चुनौती पुर्ण कार्य है। उनके अनुसार पर्यावरण विज्ञान एक ऐसा विषय हैं जिसका हमारे निजी जीवन से गहरा सम्बन्ध है।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय द्वारा अकादमिक स्टॉफ कॉलेज में 21 दिवसीय पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में न्यायमूर्ति श्री आर.बी. मिश्रा, वरिष्ठ न्यायधीश, हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायलय शिमला ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभागियों को संम्बोधित किया। अपने सम्बोधन में न्यायमूर्ति मिश्रा ने कहा कि हमे पेड़ पौधों से समर्पण और परसेवा की भावना की सीख लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन की शुरूआत माँ की कोख से होती है। चौरासी लाख योनियों से होते हुए हमें मानव जीवन की प्राप्ति होती है। इसलिये हमें प्रकृति के हर जीव की रक्षा करते हुए अपना प्रकृति ऋण चुकाना होगा। मानव की सबसे बड़ी माँ धरती माता होती है जो हमें आस्था और सहिष्णुता की सीख देती है। आज के युग में हम जैसा अन्न खाएगें वैसा ही हमारा मन होगा। अन्त में न्यायमूर्ति मिश्रा ने कहा कि अगर मानव जीयो और जीने दो के सिद्धान्त पर अमल करे तभी अपार जैव विविधता और पर्यावरण की रक्षा की जा सकेगी। श्री मिश्रा ने आगे कहा कि धरती माता से आस्था और सहिष्णुता व वनस्पतियों से कोमलता व परोपकार का गुण सीखना आवश्यक है। इसके लिए शुद्ध चित्त–वृत्ति, सकारात्मक सोच तथा अन्त:करण की स्वच्छता का निर्वहण करना ही वासुधैव कुटुम्बकम की ओर अग्रसर कर सकता है।

प्रो. पठानिया ने इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए कहा कि हमें प्रख्यात पर्यावरणविदों जिनमें मेघा पाटेकर, सुन्दर लाल बहुगुणा, चंडी प्रसाद भट्ट, शिव वंदना और किंकरी देवी के योगदानों से प्रेरणा लेते हुए अपनी समाज के

प्रति जिम्मेवारियों को निभाना चाहिए। अध्यापक को सर्वप्रथम अपना योगदान पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए घर से शुरू करना चाहिए और अपने आसपास गंदगी न फैला कर अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर प्रकृति को समृध करना चाहिए। उन्होंने ये भी कहा कि पेड़ लगाना ही काफी नहीं है बल्कि उनको सुरक्षित रखकर आने वाली पीढ़ियों को ये धरोहर जो उन्हें अपने पूर्वजों से मिली थी, सुरक्षित सौंपे।

कार्यक्रम में उप-निदेशक डॉ. किरण रेखा, डॉ. आर.पी. शर्मा और कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आनन्द सागर ने भी अपने-अपने विचार रखे। उलेखनीय है कि इस कार्यक्रम में 13 राज्यों से 41 प्राध्यापकों ने भाग लिया।

Refresher Course in Hindi (RC-227.2010)

आज दिनांक 20 सितम्बर 2010 को हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अकादमिक स्टॉफ कॉलेज में हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। 21 दिन तक चलने वाले इस पाठ्यक्रम का मुख्य विषय **हिन्दी साहित्य-विविध सोपान** था। प्रो कुलवन्त सिंह पठानिया ने कहा कि हिन्दी भाषा जो कि भारत की राष्ट्रीय भाषा है, के सम्मुख प्रमुख अनेक चुनौतियां है। उन्होंने कहा कि आज भारत को स्वतन्त्र हुए लगभग 62 वर्ष हो चुके हैं लेकिन हिन्दी पूर्णतया राष्ट्रीय भाषा नही बन पाई। आज भी हमारे ऊपर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव है। उन्होंने परीक्षार्थियों से अनुरोघ किया कि विद्यार्थियों के मन में हिन्दी के प्रति रूचि पैदा करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर प्रो. कुमार कृष्ण ने साहित्य की महत्ता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्य मानव को विकट परिस्थितियों एवं संघर्ष के दौर में नई राह दिखाता है और वे क्षण व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्त्व रखते हैं। साहित्य से अपनत्व स्थापित करते हुए उन्होंने फुर्सत के क्षणों में साहित्य की अनिवार्यता पर भी प्रकाश डाला। प्रो0 हुकुमचन्द राजपाल ने अपने बीज भाषण में साहित्य के विभिन्न बिन्दुओं को छूते हुए कहा कि साहित्य के विविध पाठ होने चाहिए। उत्तर आधुनिक विमर्श मात्र पाश्चात्य धरातल पर ही नहीं अपितु भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भी इसका विश्लेषण होना चाहिए। इनका आग्रह रहा कि भारतीय साहित्य में पहले से ही वे विमर्श विद्यमान हैं। 21 दिनों तक चलने वाले इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त देश के नौ प्रान्तों के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से 30 प्रतिभागी अपनी सहभागिता दे रहे हैं। स्रोतविद् के रूप में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड, जम्मू कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश के विषय विशेषज्ञ आमंत्रित किए गए हैं। इस पाठ्यक्रम के दौरान हिन्दी साहित्य विषय पर गम्भीरता से विचार-विमर्श होगा।

आज दिनांक 9 अक्तूबर 2010 को हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अकादमिक स्टॉफ कॉलेज में हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का समापन समारोह आयोजित हुआ। यह पाठ्यक्रम 21 दिन तक चला और इसमें देश के लगभग 9 राज्यों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का विषय "हिन्दी साहित्य: विविध सोपान" रहा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. सुनील कुमार गुप्ता, कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला रहे। मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में जो भी अध्ययन किया गया उसकी सार्थकता तथा उपयोगिता तभी है यदि उसे व्यवहार रूप में परिणत किया जाए। उन्होंने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे सभी अपने-अपने कार्यस्थलों में जाकर अपने छात्रों में साहित्यिक रूचि को जागृत करें तभी वास्तव में हिन्दी का विकास होगा और उसे उचित स्थान प्राप्त होगा। हिन्दी का विकास केवल नारों एवं पखवाड़ों से सम्भव नहीं। इसे जीवनशैली में अपनाकर ही हिन्दी भाषा की वस्तुत: रक्षा हो सकती है।

प्रो. पठानिया ने प्रतिभागियों से अनुरोध किया जो आप ने इस पुनश्चर्या कार्यक्रम में जो ज्ञान अर्जित किया है उसे विद्यार्थियों तक पहुंचाये ताकि आप का समाज के प्रति योगदान सार्थक हो सकें। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. श्रीराम शर्मा ने पुनश्चर्या कार्यक्रम सफलता की ओर संकेत करते हुए प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि जो कुछ उन्होंने इस अवधि में उपलब्ध किया है, उसे अपने अनुभव के रूप में संजो कर रखें। नकारात्मक रवैया न अपनाकर सकारात्मक सोच के सार्थ जीवन में आगे बढ़े। प्रो. शर्मा ने कुलपति के कार्यकाल की उपलब्धियों को गिनाते हुए उन्हें "उदारमना" तथा "हिन्दी-मित्र" के विशेषण से अंलकृत किया।